Research Paper | Education | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 9 | Issue : 2 | Feb 2023

विशेष विद्यालय की कक्षा में अध्ययन की सुगम्यता के प्रति श्रवण बाधित विद्यार्थियों की राय

Mr. Pawan Kumar Mishra[1], Dr. Gayatri Ahuja[2]

[1]Assistant Professor, Shri P. K. Mehta Collage of Special Education, Palanpur, Gujarat.
[2]Faculty, Department of Education, AYJNISHD (D), Mumbai.

ABSTRACT

इस अध्ययन में श्रवण बाधित विद्यार्थियों के कक्षा में अध्ययन के दौरान उनकी सुगम्यता के प्रति उनकी राय का अध्ययन किया गया। जिसमें श्रवण बाधित विद्यार्थियों को अध्ययन के दौरान होने वाली समस्याओं को इंगित किया गया, तथा उनसे संबंधित उनकी राय जानने का प्रयास किया गया। इस अध्ययन में शोधकर्ता का लक्ष्य "विशेष विद्यालय की कक्षा में अध्ययन की सुगम्यता के प्रति श्रवण बाधित विद्यार्थियों की राय" रखा गया तथा इनके अंतर्गत दो उद्देश्यों का चुनाव किया गया जो की क्रमशः पाठ्यचर्या तथा सहपाठ्यचर्या से सम्बंधित थे। इसके उपरांत इस अध्ययन में अनुसंधान प्रश्न पूछे गए स इस अनुसंधान के अंतर्गत मुंबई के विशेष विद्यालय में पढ़ने वाले श्रवण बाधित विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया था। जो कि कक्षा ६,७,८,९,१०, में पढ़ते थे, तथा प्रतिदर्शो की संख्या ३० थी तथा इनके विद्यालय का माध्यम हिंदी इंग्लिश तथा मराठी था। इसमें प्रतिदर्श का चुनाव सुविधा पूर्ण तकनीकी का इस्तेमाल किया गया स शोधकर्ता द्वारा इस अध्ययन में प्रयोग होने वाले उपकरण को गूगल फॉर्म द्वारा बनाया गया जिसमें श्रवण बाधित बच्चों की सुगम्यता को ध्यान रखते हुए इसे ३ भाषाओं के साथ साथ सांकेतिक भाषा में भी उपलब्ध कराया गया स इस अध्ययन में पूरे डेटा को गोपनीय तरीके से रखा गया। इस अध्ययन में अनुसंधान के सभी नैतिकता का पालन किया गया। इस अध्ययन के निष्कर्ष में यह पाया गया कि कक्षा में अध्ययन के दौरान पाठ्यचर्या के अंतर्गत इतनी सुविधा होने के बावजूद भी २३% सुगम्यता की कमी दिखी, साथ ही साथ सहपाठ्यचर्या के अंतर्गत विशेष विद्यालय में लगभग अभी भी ५% सुगम्यता की कमी दिखाई दी।

प्रस्तावनाः
भारतीय संस्कृति निष्पक्षता और न्याय के लिए समर्पित है आज ही नहीं प्राचीन समय से ही लोग एक दूसरे का सहयोग करते आ रहे हैं और यही हमारी संस्कृति की सबसे बड़ी धरोहर है वर्तमान समय में श्रवण बाधित बच्चों को समाज में बहुत अधिक समस्याएं होती हैं इन्हीं समस्याओं को दूर करने के लिए भारत सरकार ने नए–नए कानून बनाएं हम सभी की जिम्मेदारी है कि उसका पालन करें इसके अंतर्गत हमें श्रवण बाधित दिव्यांगों को समान अवसर, समान पहुंच आदि जैसी सुविधाओं को प्रदान करना चाहिए उन्हें शिक्षा का अधिकार है तथा उनके अनुसार हम सभी का दायित्व है कि हम उन्हें शिक्षित करें।

दिव्यांग लोगों के अधिकारों के लिए संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (UNCRPD), जिसमें भारत हस्ताक्षरकर्ता है, दिव्यांग तक पहुँच सुनिश्चित करने के लिए सरकारों पर अनुच्छेद 9 के तहत दायित्वों (अ) सूचना, (ब) परिवहन, (स) भौतिक पर्यावरण, (द) संचार प्रौद्योगिकी और (ई) सेवाओं के साथ–साथ आपातकालीन सेवाओं तक पहुंच बनाने हेतु प्रतिबद्ध है। UNCRPD और RPWD अधिनियम के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारिता विभाग, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालयने एक्सेसिबल इंडिया कैंपेन (सुगम्य भारत अभियान) की अवधारणा को सार्वभौमिक पहुँच प्राप्त करने के लिए एक राष्ट्रव्यापी प्रमुख अभियान के रूप में संकल्पित किया है, जो दिव्यांग व्यक्तियों को समान अवसर तक पहुँच प्राप्त करने और स्वतंत्र रूप से एक समावेशी समाज में जीवन का जीने के साथ साथ सभी पहलुओं को सुगम्यता प्रदान करने प्रयास करेगा। श्रवण बाधित वयस्कों के लिए, बधिर खेल आयोजनों में भाग लेना समाजीकरण का एक प्रमुख साधन है।

"विशेष शिक्षा के तहत विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान एवं उनके शैक्षिक पुनर्वास का अध्ययन किया जाता है। विशेष शिक्षा के तहत विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को स्कूल परिवार और समाज के अनुकूल समायोजित करने का प्रयास किया जाता है, ताकि वे अपने दिन प्रतिदिन की समस्याओं को हल करने में सक्षम हो सके, यानी विशिष्ट शिक्षा अक्षम बच्चों को शैक्षिक रूप से समक्ष बनाती है " (संजीव, 2008)

"विशिष्ट शिक्षा का अभिप्राय असाधारण बालकों के विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु निर्मित विशेष अनुदेशन से है इसके लिए विशिष्ट शिक्षण सामग्री शिक्षण तकनीकी उपकरण तथा सुविधाओं की आवश्यकता हो सकती है" (डॉ.आर.एस.चौहान 2001)

अध्ययन की पद्धतिः
इस शोध में शोधकर्ता ने दो उद्देश्यों कों ध्यान में रख कर बनाया।
(अ) विशेष विद्यालय में श्रवण बाधित विद्यार्थियों को कक्षा में अध्ययन के दौरान पाठ्यचर्या गतिविधियों से सम्बन्धित आने वाली समस्याओं का अध्ययन करना।

(ब) विशेष विद्यालय में श्रवण बाधित विद्यार्थियों को कक्षा में अध्ययन के दौरान सह–पाठ्यचर्या गतिविधियों से सम्बन्धित आने वाली समस्याओं का अध्ययन करना।

शोधकर्ता द्वारा लिए गए अनुसंधान के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुये प्रतिदर्श का चयन सुविधा पूर्ण तकनीकी का इस्तेमाल किया गया तथा प्रतिदर्शो को संख्या ३२ चुनी गईद्य इस अध्ययन में शोधकर्ता ने महाराष्ट्र के मुंबई जिले के कक्षा ६,७,८,९ व १० के विशेष विद्यालय के श्रवण बाधित बच्चों की कक्षा की सुगम्यता को ध्यान में रखते हुए उनकी राय के आधार पर चेक लिस्ट का निर्माण किया। यह उपकरण स्वनिर्मित तथा इसमें १६ प्रश्न पूछे गयेद्य उपयुक्त प्रक्रिया के माध्यम से उपकरण सत्यापन और विश्वसनीयता जांच सुनिश्चित की गई थी।

विश्लेषण एवं विवेचनः
कक्षा में अध्ययन की सुगम्यता के अंतर्गत दो क्षेत्रों का निर्धारण किया गया है। पाठ्यचर्या तथा सह–पाठ्यचर्या, पाठ्यचर्या के अंतर्गत हमारे द्वारा 8 प्रश्नों का एक समूह बनाया गया था जिसके लिए ३० बच्चों से संबंधित उनके प्रतिउत्तर संकलित किए गए थे जिसका विश्लेषण सारणी संख्या ४.१.१ में दर्शाया गया है।

कक्षा में अध्ययनः
अ) पाठ्यचर्या :

४.३.१ उद्देश्यः

विशेष विद्यालय में श्रवण बाधित विद्यार्थियों को कक्षा में अध्ययन के दौरान पाठ्यचर्या गतिविधियों से सम्बन्धित आने वाली समस्याओं का अध्ययन करना।

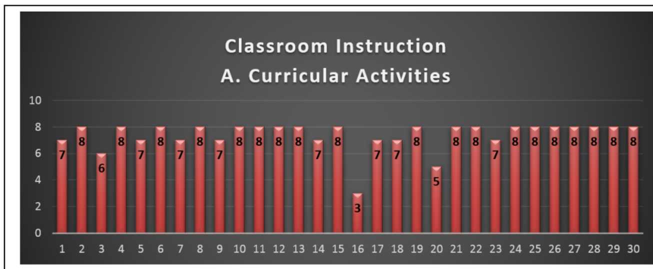
१. अनुसन्धान प्रश्नः
विशेष विद्यालय में श्रवण बाधित विद्यार्थियों को कक्षा में अध्ययन के समय पाठ्यचर्या गतिविधियों में कौन कौन सी समस्याएं होती है?

सारणी संख्या ४.३.१

कक्षा में अध्ययन के अंतर्गत पाठ्यचर्या गतिविधियों से सम्बन्धित		
श्रवण बाधित बालक और बालिकाएं	हाँ	नहीं
	222	18

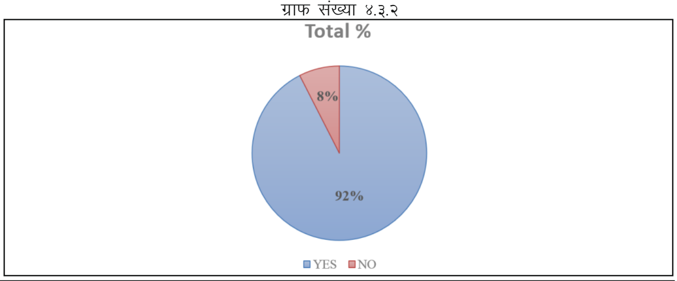
इस प्रकार यदि हम अपने विद्यालय के उद्देश्य के क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए यदि हम निष्कर्ष की बात करते हैं तो हमारी कक्षा में अध्ययन सुगम्यता के अंतर्गत पाठ्यचर्या कि सुगम्यता में 30 बच्चों के 240 में से 222 प्रतिउत्तर (हाँ) के आए हुए हैं और इसके अलावा 18 प्रतिउत्तर (नहीं) के आए हुए हैं।

अतः विद्यार्थियों के द्वारा दिए गए प्रतिउत्तर से यह प्रदर्शित होता है की वर्तमान समय में भी 8% विशेष विद्यालय कि पाठ्यचर्या में सुगम्यता की कमी है अर्थात यदि हम प्रत्येक 100 बच्चों की बात करें तो अभी भी 18 बच्चे सुगम्यता की मार को झेल रहे हैं प्रस्तुत ग्राफ में यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि ज्यादा से ज्यादा 30 बच्चों में से सिर्फ ८ बच्चों को पूर्ण रूप से कक्षा की सुगम्यता महसूस होती है।



इस प्रकार यदि हम की संपूर्ण पाठ्यचर्या सुगम्यता की बात करें तो लगभग 92% बच्चों को विशेष विद्यालय की पाठ्यचर्या में सुगम्यता मिलती है और जिसमें 8% सुगम्यता की कमी पाई गई है जैसा कि चित्र संख्या ४.३.१ में दर्शाया गया है पाठ्यचर्या कि सुगम्यता के साथ–साथ जब हम किसी एक क्षेत्र की बात करते हैं तो 30 बच्चों में से ज्यादातर प्रत्युत्तर सुगम्यता की दृष्टि से कम दिखाई देते हैं। यदि हम विशेष विद्यालय में पाठ्यचर्या से सम्बंधित शिक्षक मुझे परीक्षण को पूरा करने के लिए अतिरिक्त समय देते है के प्रतिउत्तर में मुझे सबसे कम 30 बच्चों में से 23 बच्चों का प्रतिउत्तर (नहीं) मिला, मैं कक्षा में चर्चा के दौरान अन्य छात्रों के सम्प्रेषण को समझता हूं के प्रतिउत्तर में 30 में से ३ बच्चों ने प्रतिउत्तर (नहीं) मिला इसके अलावा ज्यादातर पाठ्यचर्या में सुगम्यता देखने को मिला।

ग्राफ संख्या ४.३.२



इस प्रकार सभी प्रश्नों के प्रत्युत्तर देखने के बाद यदि हम पाठ्यचर्या के संपूर्ण सुगम्यता कि बात करें तो हमने इसे एक ग्राफ के माध्यम से दिखाने का प्रयास किया है। ग्राफ संख्या ४.३ .२ में यह दर्शाया गया है कि विद्यालय की सुगम्यता में 77% सुगम्यता पाई गई है किंतु 23% सुगम्यता की अभी भी कमी है जिसकी वजह से कहीं ना कहीं श्रवणबाधित विद्यार्थी उच्चतर शिक्षा में प्रवेश करने में उनको कठिनाई होती है इसलिए जरूरी है कि हम सबसे पहले विद्यालय की सुगम्यता पर विशेष ध्यान दें।

ब) सहपाठ्यचर्या :

४.३.२ उद्देश्यः
विशेष विद्यालय में श्रवण बाधित विद्यार्थियों को कक्षा में अध्ययन के दौरान सह–पाठ्यचर्या गतिविधियों से सम्बन्धित आने वाली समस्याओं का अध्ययन करना।

२ .अनुसन्धान प्रश्नः
विशेष विद्यालय में श्रवण बाधित विद्यार्थियों को कक्षा में अध्ययन के समय सह–पाठ्यचर्या गतिविधियों में कौन कौन सी समस्याएं होती है ?

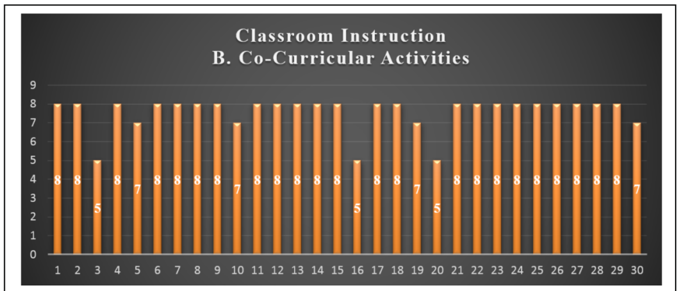
सारणी संख्या ४.३.२

कक्षा में अध्ययन के अंतर्गत सह–पाठ्यचर्या गतिविधियों से सम्बन्धित		
श्रवण बाधित बालक और बालिकाएं	हाँ	नहीं
	227	13

इस प्रकार यदि हम अपने विद्यालय के उद्देश्य के क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए यदि हम निष्कर्ष की बात करते हैं तो हमारी कक्षा में अध्ययन सुगम्यता के अंतर्गत सहपाठ्यचर्या कि सुगम्यता में 30 बच्चों के 240 में से 227 प्रतिउत्तर (हाँ) के आए हुए हैं और इसके अलावा 13 प्रतिउत्तर (नहीं) के आए हुए हैं।

अतः विद्यार्थियों के द्वारा दिए गए प्रतिउत्तर से यह प्रदर्शित होता है की वर्तमान समय में भी 5% विशेष विद्यालय कि पाठ्यचर्या में सुगम्यता की कमी है अर्थात यदि हम प्रत्येक 100 बच्चों की बात करें तो अभी भी 13 बच्चे सुगम्यता की मार को झेल रहे हैं प्रस्तुत ग्राफ में यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि ज्यादा से ज्यादा 30 बच्चों में से सिर्फ ८ बच्चों को पूर्ण रूप से कक्षा की सुगम्यता महसूस होती है

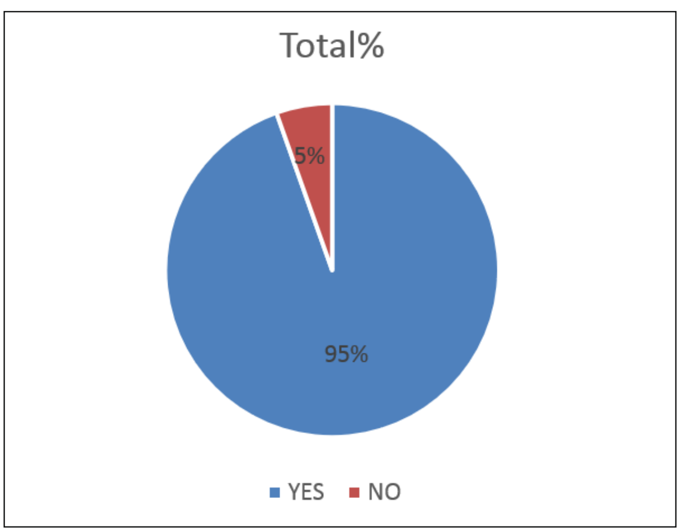
ग्राफ संख्या ४.३.२.१



इस प्रकार यदि हम की संपूर्ण सहपाठ्यचर्या सुगम्यता की बात करें तो लगभग 95% बच्चों को विशेष विद्यालय की सहपाठ्यचर्या में सुगम्यता मिलती है और जिसमें 5% सुगम्यता की कमी पाई गई है जैसा कि चित्र संख्या ४.३.२ में दर्शाया गया है सहपाठ्यचर्या कि सुगम्यता के साथ–साथ जब हम किसी एक क्षेत्र की बात करते हैं तो 30 बच्चों में से ज्यादातर प्रत्युत्तर सुगम्यता की दृष्टि से अधिक दिखाई देते हैं। यदि हम विशेष विद्यालय में पाठ्यचर्या से सम्बंधित मेरे विद्यालय में सह–पाठ्यक्रम गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। मेरे विद्यालय में छात्र प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं। मेरी प्रतिभा का पोषण (प्रोत्साहन) प्रतिभा के मूल्यांकन के माध्यम से किया जाता है। शिक्षक सम्प्रेषण के मौखिक/हस्तचालित दोनों विधियों में प्रशिक्षित है।

विद्यालय में, विद्यार्थियों को सह–पाट्यक्रम गतिविधियों का चयन करने के लिए विकल्प दिए जाते है। आदि सभी जो प्रत्युत्तर प्राप्त हुए हैं वह काफी प्रोत्साहित करने वाली हुए थे जिसमें ज्यादातर विद्यालय में सहपाठ्यक्रम में सुगम्यता ज्यादा से ज्यादा प्रदान की जाती है जिसकी वजह से बच्चे सह पाठ्यचर्या में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेते हैं।

ग्राफ संख्या ४.३.३



इस प्रकार सभी प्रश्नों के प्रत्युत्तर देखने के बाद यदि हम सहपाठ्यचर्या के संपूर्ण सुगम्यता कि बात करें तो हमने इसे एक ग्राफ के माध्यम से दिखाने का प्रयास किया है। ग्राफ संख्या ४.३ .३ में यह दर्शाया गया है कि विद्यालय की सुगम्यता में 95% सुगम्यता पाई गई है किंतु 5% सुगम्यता की अभी भी कमी है जिसकी वजह से कहीं ना कहीं श्रवणबाधित विद्यार्थी उच्चतर शिक्षा में प्रवेश करने में उनको कठिनाई होती है इसलिए जरूरी है कि हम सबसे पहले विद्यालय की सुगम्यता पर विशेष ध्यान दें।

अध्ययन की सीमाएंः
- इस अध्ययन में उन्हीं बच्चों को लिया गया है जो कि मुंबई में हिंदी इंग्लिश और मराठी माध्यम के स्कूल में अध्ययनरत हैं
- इस अध्ययन में 6 से १० तक के कक्षा के श्रवण बाधित बच्चों को ही शामिल किया गया है
- समय सीमा को ध्यान में रखते हुए इस शोध कार्य को मुंबई जिले के अंतर्गत ही किया गया है
- इस शोध में उन विशेष बच्चों को लिया गया है जो कि हिंदी इंग्लिश, मराठी भाषा का प्रयोग करते हैं

सुझाव : इस अध्ययन में सरकार के लिए सुझाव, विद्यालय के लिए सुझाव बताया गया है–
१) सरकार के लिए सुझावः
- RPWD (2016) अधिनियम के साथ बेहतर संरेखित करने के लिए त्ज्म अधिनियम में संशोधन करें।
- दिव्यांग बच्चों के सभी शिक्षा कार्यक्रमों को प्रभावी रूप से लागू के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय के तहत एक समन्वय तंत्र स्थापित करना।
- दिव्यांग बच्चों की सीखने की जरूरतों को पूरा करने के लिए शिक्षा बजट में विशिष्ट और पर्याप्त वित्तीय आवंटन सुनिश्चित करें।
- विशेष विद्यालयों की निगरानी हेतु एक कमेटी का गठन किया जाए जिससे विशेष विद्यालय की शिक्षा की गुणवत्ता के साथ–साथ उसकी सुगम्यता को ध्यान में रखते हुए उसमें सुधार किया जाए।

2) विद्यालय के लिए सुझावः
- श्रवण बाधित छात्रों की शिक्षा के लिए सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग का व्यापक रूप से विस्तार करें।
- हर बच्चे को मौका दें कि किसी भी दिव्यांग बच्चे को पीछे न छोड़ें।
- विविध शिक्षार्थियों को शामिल करने में सहायता के लिए शिक्षण प्रथाओं को बदलना।
- रूढ़िवादिता पर काबू पाएं और कक्षा और उसके बाहर, दिव्यांग बच्चों के प्रति सकारात्मक निश्चय का निर्माण करें।

REFERENCES

1. Treder, David, W, Morse William C., Ferron, John, M. (2000) .The Relationship between Teacher Effectiveness and Teacher Attitudes toward Issues Related to Inclusion. Teacher Education and Special Education, Vol. 23, No. 3 pp.202- 10.
2. UNESCO (1994). World Conference on Special needs Education: Access and Equality. (Final Reports). Salamanca: Author
3. Salend, S. Johansen, M., Mumper, J., Chase, A. Pike K& Dorney J. (1997) Cooperative teaching the voices of two teacher. Remedial and Special Education, 18 (1), 3-11.
4. Schumm, J. S& Vaughn, S. (1992) Planning for Mainstream Special Education Students: Perceptions of general classroom teacher, Exceptionality, 3 pp.81 - 90.
5. Sen P. (2004-05), "The Status of Hearing aids used by the children with hearing impairment in special school in Mumbai - A survey" Unpublished Dissertation, Regd.No. 9, M.Ed. (H.I.), University of Mumbai.
6. Finitoz - Hieber, T. and Tillman, T. (1978). Room acoustics effects on monosyllabic world discrimination ability for normal and Hearing-Impairment Children. Journal of Speech and Hearing Research, 21,440-458.
7. Jha, M. M. (2002), School without walls! Inclusive Education for All, Reed Educational and Professional Publishing Ltd.
8. Kochhar C., West, L. and Taymans, M. Juliana (2000), "Successful Inclusion", Person Education Upper Saddle River, New Jersey.
9. Kumar K. (2006), A Study of Knowledge and Skills of Teacher for Inclusive Education of Students with Hearing Impairment, Regd.no - 45, Unpublished Dissertation of M.Ed. (H.I.), University of Mumbai.
10. Ministry of Human Resource Development (MHRD) (1990) Toward an Enlightened and Human Society: NPE 1986- A Review. New Delhi: Government of India